है। पूरी पत्ती जली हुई तथा अंदर की तरफ मुड़ कर भंगुर हो जाती है। इससे बचाव हेतु कार्बेंडाज़िम (1–1.5 ग्राम प्रति लीटर) या मेंकोजेब (2–2.5 ग्राम प्रति लीटर) का 2 से 3 सप्ताह के अन्तराल पर दो या तीन बार छिड़काव किया जाना चाहिए।

8. **गेरुआ रोग (रस्ट):** रोग के लक्षण सर्वप्रथम पत्तियों की निचली सतह पर स्पष्ट के रूप में दिखाई पड़ते हैं। रोग उग्र होने पर पत्तियां झुलस कर गिर जाती हैं। फलियों के दाने चपटे होकर विकृत हो जाते हैं। खड़ी फसल में घुलनशील गंधक 0.15 प्रतिशत की दर से छिड़काव या गंधक चूर्ण 15 किग्रा. प्रति हे. की दर से या कार्बेंडाजिम/ बाविस्टीन 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव करे।

❖ **मूंगफली में प्रमुख कीट–पतंग**

1. **माहो/ फुदका /एफिड / एफिस क्रेसीवोरा:** यह कीट तने के नाजुक भाग से रस चूसते है तथा पौधों पर बड़ी संख्या में जमा होते हैं, जो दिखने में गहरे भूरे रंग के होते हैं। इसमे चीटियों का भी प्रकोप देखा गया है। ट्राइकोडर्मा विरीडी से 4 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। 36 एस.एल मोनोक्रोटोफॉस 600 मि.ली /हे. या 30 ई. सी. डाइमेथोएट 650 मि.ली./हे 600 लीटर पानी के साथ खेतों में छिड़काव करें।
2. **थिप्स/ साइरटोथ्रिप्स डोरासीलस:** यह कीड़े मुख्यत: मुड़े हुए पत्तियों या फूलों पर मिलती हैं तथा इसकी वजह से पत्तियों के निचले सतह पर उजले–उजले धब्बे आ जाते हैं। प्रतिरोधक किस्में की बुआई तथा संक्रमित पौधे को उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए। 36 एस.एल मोनोक्रोटोफॉस 600 मिली./हे या 30 ई.सी. डाइमेथोएट 650 मिली./हे 600 लीटर पानी के साथ खेतों में छिड़काव करें।
3. **जेसिड/ इमबोरसका केरी:** यह कीट पीले–हरे रंग के व पत्तियों के मध्य भाग से रस चूसते है और साथ ही जहर छोड़ते है जिससे शिरायें सफेद हो जाती है। इससे पत्तियों की हरितमा खत्म हो जाती हैं। 36 एस.एल मोनोक्रोटोफॉस 600 मिली/हे. या 30 ई. सी. डाइमेथोएट 650 मि.ली./हे 600 लीटर पानी के साथ खेतों में छिड़काव करें।
4. **लीफ माइनर/ पर्ण सुरंगक/ एबरोरिमा मोडीसिला:** इस कीट के लार्वा पत्तियों को छेद तथा उन पर जाल बनाकर नष्ट कर देते है। इसके नियंत्रण के लिए फारमेन प्रपंच का उपयोग तथा फसल चक्र अपनाना चाहिए। 25 ई.सी. क्वीनालफॉस 700 मिली./हे या मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. 750 से 600 मिली. प्रति 600 लीटर पानी में मिलाकर खेतों में छिड़काव करें।
5. **फलीछेदक / स्पोड़ोपटेरा:** यह कीट पत्तियों के उपरी सतह पर गुच्छे में अंडे देते हैं, जो सुनहले भूरे रंग के दिखाई देते हैं। यह पत्तियों को खा कर नष्ट कर देते हैं। क्यूनोल्फॉस 25 ई.सी. या क्लोरोपाईरीफॉस 20 ईसी (2 से 2.5 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
6. **लाल रोएदार इल्ली :** इन कीटों की इल्लियों का सिर लाल तथा पुरे शरीर पर भूरे–लाल रंग के घने बाल होते हैं। जिन पर काले रंग के छल्ले नुमा पट्टा होता है। यह कीट काफी तेजी से पत्तियों को खाते हैं। मुख्यत: यह कीट रात को अधिक सक्रिय होते हैं। खेत के चारो ओर गहरी खाई बनाकर 2 प्रतिशत मिथाइल पेराथियान या 5 प्रतिशत कार्बोरिल का प्रयोग करे। प्रकाश ट्रैप/ फन्दे का भी प्रयोग किया जा सकता है।
7. **सेमीलूपर:** इस कीट की इल्लियाँ हरे रंग की होती हैं जो कि एक अर्ध गोलाकार लूप में चलती हैं। यह पौधों के पत्ते, कलियाँ, फूल, फली तथा कोमल टहनियों को खाकर नुकसान पहुँचाते हैं। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ईसी. अथवा मैलाथियान 50 प्रतिशत ईसी. 2 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें। 50–60 बर्ड पर्चर (चिड़ियों की बैठने वाली व्यवस्था) प्रति हे की दर से लगाना चाहिये।
8. **सफेद लत/ गिडार:** यह कीट पौधे की जड़ें खा कर सम्पूर्ण पौधे को सुखा देती हैं। इसकी रोकथाम के लिए बुआई के 3–4 घंटे पूर्व क्लोरोपा रीफॉस 20 ई.सी. 12.5 से 25 मिली. प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित किया जाना चाहिए। खड़ी फसल में प्रकोप होने पर क्लोरोपा रीफॉस या क्युनालफॉस 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से सिचाई के पानी के साथ प्रयोग करना चाहिए।
9. **दीमक :** दीमक जड़ों तथा फलियों को कटती हैं जिससे पौधें सूख जाती हैं। फली के अन्दर गिरी के स्थान पर मिट्टी भर जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिए बुवाई के 3 से 4 घंटे पूर्व क्लोरोपाइरीफॉस 20 ईसी. अथवा क्युनालफॉस 25 ई.सी. 25 मिली. प्रति किग्रा. बीज की दर से बीज को उपचारित कर बुआई किया जाना चाहिए। खड़ी फसल में प्रकोप होने पर क्लोरोपाइरीफॉस या क्युनालफॉस 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से सिचाई के पानी के साथ प्रयोग करना चाहिए।

❖ **फसल की कटाई मड़ाई एवं सुखाना:** गुच्छेदार किस्मों में 2 महीने तक व फैलने वाली किस्मों में 3 महीने तक फूल आते रहते हैं। फलियों के विकास के लिए कम से कम दो माह का समय आवश्यक होता है। खुदाई के समय सभी फलियां पूर्ण रूप से पकी हुई नहीं होती हैं अत: खुदाई ऐसे समय पर ही करें जब अधिकतर फलियां पक जाएं। अत: जब पौधे पीले पड़ जाये व अधिकांश पत्तियां गिर जाए तभी फसल की कटाई करनी चाहिए। सामान्य परिस्थितियों में अगेती किस्में 120 दिन व पछेती किस्में 135 दिन में पककर तैयार हो जाती हैं। फलियों को पौधों से अलग करने से पूर्व उन्हें 1 सप्ताह तक 9 से 10 प्रतिशत नमी स्तर तक सुखाया जाना चाहिए।

❖ **खुदाई एवं उपज:** मूँगफली की फसल तैयार होने की स्थिति में पौधों की पत्तियों का रंग पीला पड़ने के साथ फलियों के अन्दर का टेनिन का रंग भी उड़ जाता हैं तथा मूँगफली के छिलके के ऊपर की नसे उभर आने लगती है। इस स्थिति में खेतों में हलकी सिचाई कर खुदाई करनी चाहिए तथा पौधों को अलग कर लेना चाहिए। मूँगफली की उपज खरीफ में 25 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। अनुकूल परिस्थितियों में असिंचित क्षेत्रों में इस फसल की उपज 10 से 12 कु प्रति हे तथा सिंचित क्षेत्रों में यह उपज 15 से 20 कु प्रति हे तक होती हैं किन्तु यह उपज उन्नत किस्मों तथा अन्य कारकों पर भी निर्भर करती है।

चित्र सं. 1 अल्टरनेरिया रोग | चित्र सं. 2 टिक्का रोग | चित्र सं. 3 गेरुआ रोग
चित्र सं. 4 कालर विगलन रोग | चित्र सं. 5 लाल रोएदार इल्ली | चित्र सं. 6 फलीछेदक कीट
चित्र सं. 7 माहो/फुदका | चित्र सं. 8 पर्ण सुरंगक | चित्र सं. 9 थिप्स

विशेष जानकारी हेतु संपर्क करें–

डॉ. एस. एस. सिंह

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार शिक्षा निदेशालय

दूरभाष : 7897463399

ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशन:

कुलपति

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी (उ.प्र.) 284003

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.–फोल्डर/2021/26

बुन्देलखण्ड में मूँगफली की वैज्ञानिक खेती

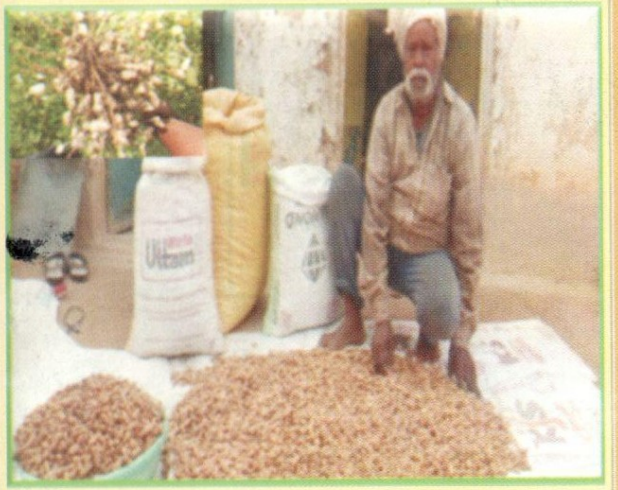

संजीव कुमार, आशुतोष शर्मा, अर्पित सूर्यवंशी

भरत लाल, विष्णु कुमार एवं सुशील कुमार चतुर्वेदी

प्रसार शिक्षा निदेशालय

रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

झाँसी 284003 उत्तर प्रदेश (भारत)

Website: www.rlbcau.ac.in

बुंदेलखंड में मूंगफली की वैज्ञानिक खेती

बुंदेलखंड में मूंगफली की खेती मुख्यत: खरीफ मौसम में की जाती है तथा यह एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है। भारत में इसकी खेती कुल 6.16 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में तथा इसकी सालाना पैदावार 7.17 लाख टन दर्ज की गई है। खरीफ मौसम में यह औसतन पैदावार लगभग 1000 किलो प्रति हेक्टेयर तथा रबी में 1600 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर तक होती हैं। मूंगफली के दानों मे 40–45 प्रतिशत तेल, 28–30 प्रतिशत प्रोटीन, 21–25 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट, विटामिन बी समूह, विटामिन–सी, कैल्शियम, मैग्नीशियम, जिंक फास्फोरस, पोटाश जैसे खनिज तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इसके बीजों से तेल निकालने के बाद बची हुई खली पशुओं के लिए एक पौष्टिक आहार के रूप में भी उपयोग होती है। मूंगफली की जड़ों में ऐसी ग्रंथियां होती हैं जिसमें उपस्थित जीवाणु वायुमंडल से नाइट्रोजन तत्व लेकर भूमि में यौगिकीकरण करते है, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है।

- **जलवायु व मौसम:** मूंगफली में वृद्धि और विकास के लिए दीर्घ ग्रीष्म काल व 21–27 डिसे. तापमान उपयुक्त होती है। अधिक पानी के प्रभाव से इस फसल पर प्रतिकूल असर होता है। मूंगफली की फलियों को पकने के लिए लगभग 1 माह तक गर्म व शुष्क मौसम अत्यंत आवश्यक है। कम ताप मूंगफली के उत्पादन के अनुकूल नहीं होती है।
- **मूंगफली की किस्मे:** बुंदेलखंड में उगाई जाने वाली मूंगफली दो तरह की होती हैं। प्रथम श्रेणी की मूंगफली के पौधे खड़े और पत्तियां गुच्छेदार होती हैं। यह शीघ्र पकने वाली किस्में होती हैं। जबकि द्वितीय श्रेणी में मूंगफली के पौधे जमीन पर फैलने वाले होते हैं और यह देर से पकती है। बुआई का समय व क्षेत्र की अनुकूलता के अनुसार किस्मों का चयन किया जाना चाहिए।

तालिका: बुंदेलखंड के मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के लिए मूंगफली की उन्नत किस्में

क्र. सं.	किस्में	वर्ष	उत्पादकता (किग्रा./हे.)	अवधि (दिन)	टिप्पणी
मध्यप्रदेश					
1.	जी.जी.–8 (जे–53)	2006	1716	104–107	कलिका उतक क्षय, गलकट व तना विगलन रोग प्रतिरोधी, 46% तेल
2.	मल्लिका (आई.सी.एच.जी.–00440)	2009	2579	125–130	मोटा दाना, तना विगलन, कलिका उतक क्षय रोग प्रतिरोधी क्षमता
3.	जे.जी.एन.–23, (जवाहर–23)	2009	1631	104	पिछेती व अगेती पर्ण स्पॉट तथा सूखा प्रतिरोधी खास कर खरीफ मौसम के लिए, 49% तेल की मात्रा
उत्तर प्रदेश					
1.	गिरनार–2 (पी.बी.एस–24030)	2008	2907	130	मोटा दाना, गेरुआ रोग, अगेती पर्ण स्पॉट, तना उतक क्षय रोग प्रतिरोधी
2.	मल्लिका (आई.सी.एच.जी.–00440)	2009	2579	125–130	मोटा दाना, तना विगलन कलिका उतक क्षय रोग प्रतिरोधी क्षमता, 48% तेल
3.	दिव्या (सी.एस.एम.जी. 2003–19)	2011	2757	129	कलिका उतक क्षय रोग प्रतिरोधी, 49% तेल
4.	एच.एन.जी. 123	2011	3000	124	गलकट, तना विगलन रोग तथा पिछेती पर्ण स्पॉट प्रतिरोधी, 49% तेल

- **भूमि की तैयारी:** भूमि को अच्छी तरह तैयार करने से वायु संचार तथा बीज के अंकुरण के लिए अनुकूल स्थिति बनती है एवं मृदा की नमी उपयुक्त स्तर पर बनी रहती है। मूंगफली की फलियां जमीन के अंदर बनने के कारण मृदा भुरभुरी, पर्याप्त हवादार व जीवाश्म युक्त होनी चाहिए। इसकी खेती हेतु कैल्शियम एवं जैव पदार्थों से युक्त बलुई दोमट मृदा, जिसमे जल निकास का उचित प्रबंध हो, उत्तम मानी जाती होती है। अम्लीय और क्षारीय मृदा इसके लिय उपयुक्त नहीं होती । मूंगफली की अच्छी पैदावार के लिए मृदा का पी.एच. मान 5.5 से 7.0 के मध्य होना चाहिए। खेतों को सबसे पहले मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई कर कल्टीवेटर या हैरो चलाये तथा अंत में पाटा लगा कर समतल कर लेनी चाहिए। बहुत ज्यादा जुताई करने से अनावश्यक रूप से उत्पादन लागत बढ़ती है तथा मिट्टी की गुणवत्ता पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।
- **बीजों की मात्रा एवं बुआ :** बुआई के लगभग 10 दिन पहले फलियों से बीज निकाले तथा टूटे–फूटे, अपरिपक्व व संक्रमित बीजों को छांट ले। बीजों की अंकुरण क्षमता जांच लेने से कम अंकुरण के नुकसान को कम किया जा सकता हैं। यदि अंकुरण प्रतिशत कम हो तो अतिरिक्त बीज की बुआई करें। फैलने एवं अर्द्ध फैलने वाली मूंगफली किस्मे पकने के बाद 7 से 70 दिनों तक सुसुप्तवस्था रहती है। इनकी सुसुप्तवस्था को तोड़ने के लिए 250 पी.पी.एम इथ्रिलबिलियन में 6 से 8 घंटे तक डुबोकर रखें। मूंगफली की गुच्छे दार प्रजातियों में 90–100 किलोग्राम एवं फैलने व अर्ध फैलने वाली प्रजातियों की 75–80 किग्रा. बीज (दाने) प्रति हे. की आवश्यकता होती हैं। इसकी बुआई जून महीने के दूसरे सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक अवश्य कर ले। गुच्छे–दार प्रजातियों के लिए कतार से कतार की दूरी 30 सें. मी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंमी. तथा फैलने वाले व अर्ध फैलने वाली प्रजातियों के लिए कतार से कतार की दूरी 45 सेंमी. तथा पौधे से पौधे की दूरी 15 सेंमी. एवं बीज कि बुआई 3–4 सेंमी. की गहराई पर करनी चाहिए। भारी मृदाओं में गहराई 4–5 सेमी. व हल्की भूमियों में 5–7 सेमी. गहराई पर बुआई की जानी चाहिए। ड्रिल मशीन से कतार में बीजों की बुआई करे जिससे सिंचाई और निराई–गुड़ाई करने में आसानी रहे तथा साथ में जिप्सम और सल्फर का भी प्रयोग करे।
- **बीजों का शोधन:** बीजों को बुआई से पहले 2 ग्राम थीरम तथा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम से प्रति किग्रा. की दर से बीज को शोधित करना चाहिए। इस शोधन के 5–6 घंटे बाद बोने से पहले बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर उसे 2–3 घंटे छाया में सुखा कर बुआई करनी चाहिए । 250 ग्राम कल्चर 10 किलो बीज के लिए प्रयाप्त होती हैं। उपचारित बीज कि बुआई सुबह 10 बजे से पहले या सायं 4 बजे के बाद करनी चाहिए।
- **खाद एवं उर्वरक:** मृदा परीक्षण के आधार पर ही उर्वरको का प्रयोग किया जाना चाहिए। यदि किसी कारणवस मृदा परीक्षण नहीं किया गया हैं, तो 100–150 क्विंटल अच्छी सड़ी हुई गोबर खाद या कम्पोस्ट खाद खेत की तैयारी करते आखिरी जुताई में दौरान मिला देना चाहिए। इसके अलावा 20 किग्रा. नत्रजन, 60 किग्रा. स्फूर, 45 किग्रा. पोटाश, 250 किग्रा. जिप्सम एवं 4 किग्रा. बोरेक्स प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए। मूंगफली की जड़ों में ग्रंथियों ग्रंथियां होती है जो वातावरण से नत्रजन स्थिरीकरण में मदद करता हैं जिससे हमें नत्रजन (यूरिया) की कम मात्रा लगती हैं । नत्रजन, स्फूर एवं पोटाश की पूरी मात्रा तथा जिप्सम की आधी मात्रा बुआई के समय बीज के नीचे 2–3 सेंटी मीटर गहराई पर डालना चाहिए। जिप्सम की बची आधी शेष मात्रा और बोरेक्स की सम्पूर्ण मात्रा को फसल की तीसरी सप्ताह के दौरान (टॉप ड्रेसिंग) खेतों में बिखेर देनी चाहिए।

बारानी स्थिति में नत्रजन, फास्फोरस तथा पोटाश की अनुशासित मात्रा

राज्य	नत्रजन (किग्रा./हे.)	फास्फोरस (किग्रा./हे.)	पोटाश (किग्रा./हे.)
मध्य प्रदेश	20	40	20
उत्तर प्रदेश	15	30	45

- **भूमि उपचार:** मूंगफली फसल में मुख्यत: सफेद लट एवं दीमक का प्रकोप होता है, इसलिए भूमि में आखिरी जुताई के समय फॉरेट 10 जी या कार्बोफ्यूरान 3 जी से 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से उपचारित किया जाना चाहिए। दीमक का प्रकोप कम करने के लिए खेत की पूरी सफाई जैसे पूर्व फसलों के डंठल आदि के अवशेषों को हटा दे तथा कच्ची गोबर की खाद का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- **निराई–गुड़ाई :** पहली निराई–गुड़ाई बुआई के 14 दिनों के बाद तथा 30 से 35 दिनों के बाद दूसरी निराई–गुड़ाई करनी चाहिए। अंकुरण होने और पौधें जम जाने के 20 से 25 दिन बाद निराई–गुड़ाई शुरू करे। इससे मिट्टी चढ़ाने का कार्य स्वत: हो जाता है तथा जड़ों का विकास भी सही प्रकार से होता हैं और साथ ही पौधों की नस्सों भूमि में आसानी से प्रवेश कर जाती है। खूंटियां बनने (पेलगग) के समय निराई–गुड़ाई नहीं करनी चाहिए।
- **खरपतवार नियंत्रण:** रासायनिक विधि से खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडलमिथेलीन 38.7 प्रतिशत 750 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग अथवा खड़ी फसल में इमेजाथापर 100 मिली. सक्रिय तत्व को 400 से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर बुआई के 15 से 20 दिन बाद प्रयोग कर सकते हैं।
- **सिंचाई प्रबंधन:** मूंगफली में प्रारंभिक वानस्पतिक वृद्धि अवस्था, फूल, खूंटियां बनना (पेलगग) व फली बनाने की अवस्था में सिचाई की आवश्यकता होती हैं। अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए कुल 8 सिचाइयां जैसे बुवाई के तुरंत बाद, बुवाई के 25 दिन बाद तत्पश्चात 4 सिचाइयां 10 दिनों के अंतराल पर तथा अंतिम दो सिचाइयां 12 से 15 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए। यदि सिचाई जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न हो तो एक सिचाई बुवाई के 25 दिन बाद तथा तत्पश्चात 2 सिचाई 15 दिनों के अंतराल पर बुवाई के 45 से 75 दिनों के मध्य करने से समुचित उपज लिया जा सकता है। खेतों में आवश्यकता से अधिक जल होने पर तुरंत जल निकासी की जानी चाहिए। बूंद–बूंद (टपक) पद्धति अपना कर पानी की बचत के साथ उपज भी बढ़ाई जा सकती हैं।
- **मूंगफली में प्रमुख रोग:**

1. **गलकट विगलन (कॉलर रॉट) रोग:** इस बीमारी में अंकुरित होने पर बीजपत्रों पर हलके भूरे रंग का गोलाकार धब्बा बनते लगता हैं तथा अंकुरित बीज सड़ने के कारण मर जाते है। इस रोग से बचने के लिए प्रतिरोधी किस्मों का चुनाव करें तथा बीज शोधन पश्चात ही बुआई करनी चाहिए। बुआई से पहले प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरेम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या 2 ग्राम मैन्कोजेब से उपचारित करें। बीजों को थायरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. (1.5 ग्राम) और ट्राइकोडरमा (10 ग्राम) और राइजोबेरियम कल्चर (3 पैकेट) को एक साथ प्रति किलोग्राम की दर से भी उपचारित कर बुआई करें।
2. **तना विगलन रोग(स्टेम रॉट):** मिट्टी सतह के पास तने पर संक्रमण होता है तथा पौधे के निचले हिस्से पर सफेद रंग का फफूंद इसे पूरी तरह घेर लेती है। पूरी टहनी या पूरा पौधा ही गल कर नष्ट हो जाता है। नियंत्रण के लिए फसल अवशेषों को गहरी जुताई कर 20 से 25 सेमी गहराई पर दबा दें। जैव नियंत्रक नियंत्रकों तथा नीम या अरंडी की खली का प्रयोग किया जा सकता है। बीज उपचार के पश्चात ही बुआई की जानी चाहिए।
3. **शुष्क जड़ विगलन रोग (ड्राई रूट रॉट):** मिट्टी सतह से सटे तने पर धब्बे पानी में भीगे हुए प्रतीत होते हैं, जो तने के चारो ओर फैल जाते हैं तथा तना हलके या गहरे काले पड़ कर अंतत: मर जाते हैं। अत्यधिक संक्रमण की स्थिति में फलियों का गलन भी पाया जाता है। रोग नियंत्रण हेतु कार्बेन्डाजिम या थायरम 2 से 3 ग्राम प्रति बीज की दर से उपचारित करे तथा रोग प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करे ।
4. **कलिका उतक क्षय रोग (पी.बी.एन.डी.):** पौधे के हरे ऊतकों का रंग बदलने लगता है, जो बाद में पीला या भूरा हो कर अंत में ऊतकों की मृत्यु हो जाती है। इस रोग में शीर्ष कलियाँ सूख जाती हैं। रोग ग्रषित पौधों में नयी पत्तियां छोटी तथा गुच्छे में निकलती हैं। इस रोग से नियंत्रण के लिय डाइमेथोएट 30 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव किया जाना चाहिए।
5. **तना उतक क्षय रोग (पी.एस.एन.डी.):** इस बीमारी में नए पत्तों पर चकते नजर आते है। धीरे–धीरे ये चकते मिल कर समस्त पत्तों पर फैल कर धीरे–धीरे तनों पर भी फैल जाते हैं, और पत्ते मर जाते हैं। इस रोग में सहायक डाठों/डंठल का अत्यधिक संख्या में वृद्धि नहीं होती जैसा कलिका उतक क्षय रोग में पाया जाता हैं।
6. **अगेती एवं पछेती टिक्का रोग (सर्कोस्पोरा पर्सोनाटा/आरेचीडीकोला):** एक या दो माह के पौधें पर इस रोग का प्रकोप देखा जाता है। पत्तियों के ऊपर बहुत अधिक धब्बे बनाने के कारण पकने के पूर्व ही गिर जाती है जिससे फलियां बहुत कम और छोटी प्राप्त होती हैं। इसके नियंत्रण हेतु मूंगफली की खुदाई के बाद फसल अवशेषों को एकत्र कर जला देना चाहिए। बीज उपचार अत्यंत आवश्यक हैं। कार्बेंडाज़िम (1–1.5 ग्राम प्रति लीटर) या मेंकोजेब (2–2.5 ग्राम प्रति लीटर) का 2 से 3 सप्ताह के अन्तराल पर दो या तीन बार छिड़काव किया जाना चाहिए।
7. **अल्टरनेरिया पर्ण अंगमारी रोग :** पत्तियों का ऊपरी भाग जलना प्रारंभ होता है जो हल्के भूरे रंग के धब्बों के रूप में परिवृतत हो कर पत्तियों के बीच तक फैलता जाता